संख्या-384/2018/379/22-2-2018-17(460)/2017

प्रेषक,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर,
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 **लखनऊ दिनांक 02 मई, 2018**

विषय आदर्श कारागार, लखनऊ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी निर्मल गोडिया पुत्र श्री सुन्दर गोडिया, निवासी जनपद-बाराबंकी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक अपने पत्र संख्या-8399/प्रोबेशन-3/फार्म-ए (एम-02-05-2017) दिनांक-07-03-2018 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- आपके उक्त पत्र दिनांक 07-03-2018 द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार बन्दी निर्मल गोडिया पुत्र श्री सुन्दर गोडिया, निवासी ग्राम-टिकुरी मजरे सरवन टिकठा, थाना-असन्द्रा, जनपद-बाराबंकी का रहने वाला है। बन्दी का पट्टीदार दाताराम व बिहारीलाल से जमीन का विवाद चल रहा था इसी रंजिश में दिनांक 17-02-2002 को अपने 02 सहअभियुक्तों के साथ् मिलकर बांका से वारकर बिहारीलाल की हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-201/2002 में भा0द0वि0 की धारा-**302**/34 के अन्तर्गत मा0 अपर सत्र न्यायाधीश, त्वरित न्यायालय सं0-28, बाराबंकी के आदेश दिनांक 16.09.2004 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया है। बन्दी द्वारा दिनांक 03-04-2017 तक 15 वर्ष 01 माह 08 दिन की अपरिहार सजा तथा 18 वर्ष 03 माह 29 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति नहीं की गयी है। प्रोबेशन बोर्ड ने अंकित किया है कि बन्दी ने जमीन के विवाद की रंजिश में दिनांक 17-02-2002 को 02 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर बांका से वारकर बिहारीलाल की हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है तथा इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी का अपराध समाज को प्रभावित करने, भविष्य में अपराध करने का अवसर होने, अशक्त न होने, जेल में और आगे निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने, पारिवारिक सामाजिक व आर्थिक दशा समयपूर्व रिहाई हेतु उपयुक्त न होने, इसकी पुष्टि पुलिस अधीक्षक, जिला प्रोबेशन अधिकारी एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा 05 बिन्दुओं की आख्या में की है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता, जघन्यता एवं जनपदीय अधिकारियों द्वारा समयपूर्व रिहाई का किये गये विरोध के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोवेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी निर्मल गोडिया पुत्र श्री सुन्दर गोडिया को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की **संस्तुति नहीं की** गयी है।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अतः इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in

3- उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी निर्मल गोडिया (बन्दी संख्या-15002) पुत्र श्री सुन्दर गोडिया, निवासी जनपद-बाराबंकी के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति शासन द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतदद्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

संख्या-**384/2018/379(1)/22-2-2018** तद्दिनांक

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, जनपद बाराबंकी।
2- वरिष्ठ अधीक्षक, आदर्श कारागार, लखनऊ।
3- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री, कारागार विभाग को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।
4- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

शासनादेश सख्ंया-384/2018/379/22-2-2018-17(460)/2017

दिनांक 02 मई, 2018 का संलग्नक

सरकार के आदेश

आदर्श कारागार, लखनऊ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी निर्मल गोडिया (बन्दी संख्या-15002) पुत्र श्री सुन्दर गोडिया, निवासी ग्राम-टिकुरी मजरे सरवन टिकठा, थाना-असन्द्रा, जनपद-बाराबंकी का निवासी है। बन्दी का पट्टीदार दाताराम व बिहारीलाल से जमीन का विवाद चल रहा था इसी रंजिश में दिनांक 17-02-2002 को अपने 02 सहअभियुक्तों के साथ् मिलकर बांका से वारकर बिहारीलाल की हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-201/2002 में भा0द0वि0 की धारा-**302**/34 के अन्तर्गत मा0 अपर सत्र न्यायाधीश, त्वरित न्यायालय सं0-28, बाराबंकी के आदेश दिनांक 16.09.2004 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया है। बन्दी द्वारा दिनांक 03-04-2017 तक 15 वर्ष 01 माह 08 दिन की अपरिहार सजा तथा 18 वर्ष 03 माह 29 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति नहीं की गयी है। प्रोबेशन बोर्ड ने अंकित किया है कि बन्दी ने जमीन के विवाद की रंजिश में दिनांक 17-02-2002 को 02 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर बांका से वारकर बिहारीलाल की हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है तथा इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी का अपराध समाज को प्रभावित करने, भविष्य में अपराध करने का अवसर होने, अशक्त न होने, जेल में और आगे निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने, पारिवारिक सामाजिक व आर्थिक दशा समयपूर्व रिहाई हेतु उपयुक्त न होने, इसकी पुष्टि पुलिस अधीक्षक, जिला प्रोबेशन अधिकारी एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा 05 बिन्दुओं की आख्या में की है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता, जघन्यता एवं जनपदीय अधिकारियों द्वारा समयपूर्व रिहाई का किये गये विरोध के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोवेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी निर्मल गोडिया पुत्र श्री सुन्दर गोडिया को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की **संस्तुति नहीं की** गयी है। उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त शासन द्वारा बन्दी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई **अस्वीकार** किये जाने का निर्णय लिया गया है।

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in